



Your Coaching Name



For: - Class – 12th Arts (Bihar Board)

विषय :- अर्थशास्त्र

अध्याय – 1. परिचय

LOGO

Here



अर्थशास्त्र (Economics):- यह सामाजिक

विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अंतर्गत आर्थिक क्रियाओं जैसे उपभोग, उत्पादन, निवेश आदि का अध्ययन चरणबद्ध तरीके से किया जाता है।

उद्देश्य:- राष्ट्र की भौतिक संपत्ति में वृद्धि करना, तथा लोगों के कल्याण में वृद्धि करना है।

आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक :-

एडम स्मिथ (स्काटलैंड)

पुस्तक - "एन इन्क्वायरी इन्टू द नेचर एंड काउज ऑफ़ द वेल्थ ऑफ़ नेशन"

An enquiry into the nature and cause of the wealth of Nations. (1776)

भारतीय अर्थशास्त्र के जनक:-

चाणक्य / कौटिल्य

जन्म :- तक्षशिला (पाकिस्तान)

अर्थव्यवस्था (Economy):-

अर्थव्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था को कहते हैं जिसके अंतर्गत उस क्षेत्र के लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाएँ करते हैं। इसके अंतर्गत उत्पादन, वितरण और खपत सामिल है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics) :- व्यष्टि

अर्थशास्त्र में केवल एक व्यक्ति या किसी एक व्यक्तिगत इकाई की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics) :- समष्टि

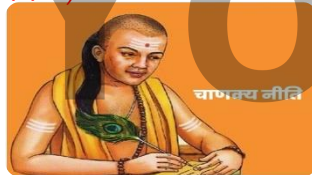
अर्थशास्त्र संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।

जैसे:- राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, कुल रोजगार, कुल उत्पादन, आदि।

समष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएँ:-

(i) समष्टि इकाइयों का अध्ययन:- इसमें समग्र इकाइयों जैसे राष्ट्रीय आय, कुल उत्पादन, कुल रोजगार, राष्ट्रीय बचत आदि का समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है।

(ii) समष्टि आर्थिक चर (Variable):- समष्टि चर वे चर हैं जिनका संबंध संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर होता है।



जैसे:- राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय उत्पाद, राष्ट्रीय आय, कुल रोजगार, समग्र माँग, समग्र पूर्ति, आदि।

(iii) समष्टि उपकरण:- विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है उसे समष्टि उपकरण कहते हैं।

जैसे:- राजकोषीय नीति, मोद्रिक नीति, आय नीति।

(iv) संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित :- इसमें संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित नीतियों का अध्ययन किया जाता है। एवं इसे प्रभाव का भी संपूर्ण समाज या राष्ट्र पर विशलेषण किया जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र

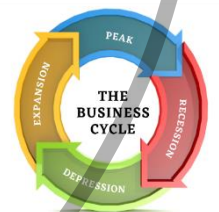
(1) आय एवं रोजगार का सिद्धांत: समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, उसकी विभिन्न अवधारणाओं तथा उसकी माप की विधियों का अध्ययन किया जाता है। इसके अलावे रोजगार निर्माण के विभिन्न तत्वों जैसे प्रभावपूर्ण माँग, कुल पूर्ति, कुल उपभोग, कुल निवेश, कुल बचत आदि का अध्ययन किया जाता है।

2. सामान्य कीमत स्तर एवं मुद्रा स्फीति सिद्धांत:- यह सिद्धांत मुद्रा पूर्ति करने वाले विभिन्न संघटक, अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव, थोक मूल्य सूचकांक के निर्माण मुद्रा स्फीति (Inflation) एवं अपस्फीति (Deflation) का अध्ययन करता है।

3. व्यापार चक्रों के सिद्धांत:- समष्टि अर्थव्यवस्था में अर्थव्यवस्था में आई तेजी या मंदी यानी व्यापार चक्र एवं उससे जुड़ी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

4. आर्थिक विकास का सिद्धांत:- इसके तहत किसी राष्ट्र के अल्पविकसित होने के कारण तथा विकास करने की नीतियाँ, प्रति व्यक्ति आय से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

5. वितरण का समष्टि सिद्धांत:- इस सिद्धांत से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय आय में से उत्पादन के विभिन्न साधनों का हिस्सा किस प्रकार और कितना निर्धारित हो। अर्थात् मजदूरों, उद्यमियों तथा भूमिपतियों को कितना भाग प्राप्त हो।



समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व:- वर्तमान समय में इसकी उपयोगिता निम्नानुसार है:-

(i) **सरकारी आर्थिक नीतियों का निर्माण** – सरकारी आर्थिक नीतियों के सफल निर्माण के लिए व्यापक आर्थिक विश्लेषण परमावश्यक है। राज्य का उद्देश्य पुरे समाज के लिए अधिकतम कल्याण प्राप्त करना होता है। इसके लिए समग्र रूप से अर्थशास्त्र के घटकों का अध्ययन एवं प्रयोग आश्यक है।

(ii) **आर्थिक विकास** – अल्पविकसित देशों में आर्थिक विकास का दायित्व प्रमुख रूप से सरकार पर होती है। पूँजी-निर्माण की दर में वृद्धि करने के लिए आर्थिक योजनाओं का निर्माण महत्वपूर्ण है जिसके लिए समष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

(iii) **अर्थव्यवस्था का समूचा अध्ययन** – समूचे यानि की समग्र अर्थव्यवस्था का अध्ययन करने के लिए हमें समष्टि अर्थशास्त्र का आर्थिक विश्लेषण करना जरूरी है। राष्ट्रीय आय, कुल उत्पादन, कुल उपभोग, कुल बचत, पूँजी निर्माण की दर आदि तथ्यों का अध्ययन और विश्लेषण करने के लिए व्यापक अर्थशास्त्र की आवश्यकता है।

(iv) **व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन में सहायक:-** समष्टि अर्थशास्त्र हमें किसी एक व्यक्ति या एक इकाई के लिए निति निर्माण या मूल्य निर्धारण आदि में काफी सहायक होती है।

(v) **अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएँ:-** अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के मध्य उनकी आर्थिक प्रगति की तुलना करने के लिए जो आवश्यक सूचनाएं चाहिए वो हमें समष्टि अर्थशास्त्र के द्वारा ही उपलब्ध हो पाती है।

व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर:-

व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1. व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक संबंधों या आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करता है।	1. समष्टि अर्थशास्त्र संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक संबंधों अथवा आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करता है।
2. समष्टि अर्थशास्त्र मुख्यतः एक व्यक्तिगत फर्म अथवा उद्योग में	2. समष्टि अर्थशास्त्र का संबंध मुख्यतः संपूर्ण अर्थव्यवस्था में कुल

उत्पादन तथा कीमत के निर्धारण से संबंधित है।	उत्पादन तथा सामान्य कीमत स्तर के निर्धारण से है।
3. इसके मुख्य उपकरण माँग और पूर्ति है।	3. इसके मुख्य उपकरण समग्र माँग व समग्र पूर्ति है।
4. यह विश्लेषण अपेक्षाकृत सरल है।	4. यह विश्लेषण अपेक्षाकृत सरल है।
5. इसकी केन्द्रीय समस्या कीमत निर्धारण है।	5. इसकी प्रमुख समस्या उत्पादन एवं रोजगार का निर्धारण है।

व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र की पारस्परिक निर्भरता:- सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण की दो अलग-अलग पद्धति हैं और ये दोनों ही पद्धतियाँ परस्पर पूरक एवं एक दुसरे पर निर्भर है।

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र की समष्टि अर्थशास्त्र पर निर्भरता:-

समष्टि आर्थिक विश्लेषण के लिए व्यष्टि यानि सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण का अध्ययन अति आवश्यक है। संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन करने के लिए व्यक्तिगत इकाइयों की जानकारी होना अति आवश्यक है। इसके लिए हमें व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता है। यदि सभी लोगों की आय बढ़ जाती है तो उस बड़ी हुई आय को लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यय करेंगे जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में भिन्न-भिन्न प्रकार की मांग बढ़ेगी अर्थात् ऐसी स्थिति में किन-किन वस्तुओं का उत्पादन कितनी मात्रा में किया जाए, यह व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण के आधार पर ही निर्धारित किया जा सकता है।

2. समष्टि अर्थशास्त्र की व्यष्टि अर्थशास्त्र पर निर्भरता:- निम्न

उदहारण से यह स्पष्ट होता है की समष्टि आर्थिक विश्लेषण सूक्ष्म / व्यष्टि अर्थशास्त्र पर निर्भर करता है।
(क) व्यापक स्तर पर आर्थिक निष्कर्ष निकलने के लिए व्यक्तिगत इकाइयों की जानकारी पर आवश्यक है।
(ख) व्यक्तिगत आर्थिक क्रियाओं का योग ही अर्थव्यवस्था की आर्थिक क्रियाओं का निर्धारण करता है। उपभोग, बचत, रोजगार आदि का निर्धारण व्यक्तिगत आर्थिक क्रियाओं पर आधारित है।

अतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है की व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र भले जी आर्थिक विश्लेषण की दो अलग – अलग रीतियाँ हैं किन्तु ये परस्पर प्रतियोगी न होकर पूरक हैं यानि एक दुसरे पर निर्भर है।

❖ **1929 की महामंदी का वर्णन:-** 1929 ई० की महामंदी विश्व इतिहास की सबसे भयंकर आर्थिक संकटों में से एक थी। इसे अमेरिका में “विश्वासघात” भी कहा जाता है इस मंदी ने यूरोप और उत्तरी अमेरिका सहित दुनिया भर में व्यापक प्रभाव डाला। इस समय अमेरिका शेयर बाजार में भारी गिरावट हुई, जिसके कारण लाखों लोग बेरोजगार हो गए और आर्थिक स्थिति अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण बन गई। बाजरा में वस्तुओं की मांग कम थी कई सारे कारखाने बंद हो गए थे, श्रमिकों को काम से निकल दिया गया था। विश्व व्यापार में कमी हुई और विभिन्न देशों में बेरोजगारी और गरीबी में वृद्धि हुई की दर 3% से बढ़कर 25% हो गई थी।

इस घटना ने अर्थशास्त्रियों को एक नये तरीके से अर्थव्यवस्था के प्रकार्य को समझने एवं सोचने के लिए प्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप समष्टि अर्थशास्त्र जैसे विषय का उद्भव हुआ।

❖ **जान मेनार्ड कीन्स:-**

- ✓ इसे ही समष्टि अर्थशास्त्र का जनक कहा जाता है।
- ✓ यह एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री थे।
- ✓ इनकी शिक्षा किंग्स कॉलेज, कैंब्रिज, यूनाइटेड किंगडम से हुई थी।
- ✓ इसके द्वारा लिखित पुस्तकें हैं-
 - (i) इकोनॉमिक किन्सिकेसेज ऑफ़ द पीस – 1919
 - (ii) जनरल थ्योरी ऑफ़ इन्प्लायमेंट इंटरैस्ट एंड मनी - 1936

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था:- वैसी अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पादन के सभी साधनों पर निजी व्यक्तियों का अधिकार और नियंत्रण हो तथा सभी आर्थिक क्रियाएँ निजी हित एवं लाभ के लिए किया जाता है, जिसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है उसे पूंजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं।

❖ इसकी कुछ प्रमुख विशेषता इस प्रकार हैं:-

निजी संपत्ति का अधिकार:- इस अधिकार का अर्थ है निजी संपत्ति जैसे- जमीन, कारखाना, मशीन, संयंत्र आदि का स्वामित्व निजी व्यक्तियों का कंपनियों के अधीन हो सकता है।

मूल तंत्र:- आपूर्ति और माँग की ताकतें अर्थव्यवस्था में कीमत और उत्पादन के स्तर को निर्धारित करती है। इस मामले में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है।

(iii) लाभ का उद्देश्य:- सभी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के पीछे का उद्देश्य अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना है। जिसके लिए अधिकतम उत्पादन एवं बिक्री करण चाहती है। इससे अर्थव्यवस्था में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी उत्पन्न होती है।

(iv) उद्यम की स्वतंत्रता:- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी हस्तक्षेप के अपने आर्थिक विकल्प चुनने के लिए स्वतंत्र है। इसमें उपभोक्ता एवं उत्पादक दोनों शामिल है।

कुछ प्रमुख शब्दों की परिभाषा :-

(i) उपभोक्ता - अंतिम रूप से तैयार वस्तुओं एवं सेवाओं का उपयोग / इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति जो उपयोग के बदले मूल्य अदा करता है।

(ii) उत्पादक - वह व्यक्ति या इकाई जो आगतों (कच्चा माल) से वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करता है तथा अपने उत्पादित वस्तुओं को बाजार में अधिकतम लाभ पर बेचता है उसे उत्पादन कहते हैं।

(iii) सरकार - अर्थशास्त्र में किसी संपूर्ण राज्य या देश को सूचित करने के लिए सरकार शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(iv) फर्म - उत्पादन करने वाली इकाईयों को फर्म कहते हैं।

(v) पारिवारिक क्षेत्रक - एकल व्यक्तिगत उपभोक्ता या कुछ व्यक्तियों का समूह जिसके उपभोग संबंधी निर्णय को स्वयं लेता है उसे पारिवारिक क्षेत्रक कहते हैं।

(vi) बाह्य क्षेत्र का संबंध देश - विदेश से, आयात – निर्यात से एवं अर्थव्यवस्था में विदेशी पूंजी के प्रवाह से है।

(vii). ब्याज दर - जमा किये गए, उधार दिए गये, या उधार लिये गये किसी धन पर किसी सिमित अवधि में

जिस दर से ब्याज दिया / लिया जाता है उसे ब्याज दर कहते हैं।

(viii) मजदूरी दर – श्रमिक की सेवाओं का क्रय – विक्रय एक निश्चित कीमत पर होता है, जिसमें मजदूरी की दर कहते हैं।

(ix) निवेश व्यय – उत्पादन क्षमता में वृद्धि लाने के लिए जो व्यय किया जाता है उसे ही निवेश कहते हैं।

(x) उद्यमी – उद्यमी ऐसे लोग होते हैं जो बड़े निर्णय लेते हैं तथा फर्म या उद्यम के साथ जुड़े बड़े जोखिम का वहन करते हैं।

(xi) आगत – वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रयोग में लिए गये साधन जैसे कच्चा माल या मध्यवर्ती वस्तु को आगत (input) कहा जाता है।

(xii) आर्थिक एजेंट – आर्थिक इकाई अथवा आर्थिक एजेंट से हमारा तात्पर्य उन व्यक्तियों या संस्थाओं से है जो आर्थिक निर्णय लेते हैं। वे उपभोक्ता या उत्पादक भी हो सकते हैं जो या निर्णय ले सकते हैं कि वस्तु का कितना उपभोग या कितना उत्पादन करना है। वे सरकारी निगम, बैंक जैसी संस्थाएं भी हो सकती हैं। जो आर्थिक निर्णय लेते हैं कि कितना खर्च करना है, कितना कर लगाना है कितना ब्याज दर लेना है, आदि।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:-

(1) अंग्रेजों का शब्द 'मैक्रो' ग्रीक भाषा के शब्द 'मैक्रोज' से लिया गया है जिसका अर्थ है-

- (अ) सूक्ष्म
- (ब) व्यापक
- (स) व्यक्तिगत
- (द) इनमें से कोई नहीं

2. समष्टि अर्थशास्त्र की निम्नलिखित में कौन-सी विशेषताएँ हैं?

- (अ) समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, कुल रोजगार, सामान्य कीमत स्तर आदि का अध्ययन किया जाता है।
- (ब) समष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित नीतियों का अध्ययन किया जाता है।
- (स) समष्टि आर्थिक चर समष्टि अर्थशास्त्र विषय-सामग्री के महत्वपूर्ण भाग होते हैं।
- (द) उपर्युक्त सभी।

3. समष्टि अर्थशास्त्र के क्षेत्र में निम्नलिखित में कौन-सा अध्ययन विषय सम्मिलित है?

- (अ) आय एवं रोजगार सिद्धान्त
- (ब) सामान्य कीमत स्तर एवं मुद्रास्फीति का सिद्धान्त
- (स) व्यापार चक्रों का सिद्धान्त
- (द) उपर्युक्त सभी (All the above)

4. व्यापक अर्थशास्त्र की निम्नलिखित में कौन-सी उपयोगिता है?

- (अ) सरकारी आर्थिक नीति का निर्माण (Formation of Government Economic Policy)
- (ब) आर्थिक विकास (Economic Growth)
- (स) अन्तर्राष्ट्रीय तुलनाएँ (International Comparisons)
- (द) उपर्युक्त सभी (All the above)

5. समष्टि अर्थशास्त्र की निम्नलिखित में कौन-सी सीमाएँ हैं?

- (अ) सामूहिक अर्थशास्त्रीय विरोधाभास
- (ब) वैयक्तिक इकाइयों की अवहेलना
- (स) अ और व दोनों
- (द) इनमें से कोई नहीं

6. समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन का विषय है-

- (अ) राष्ट्रीय आय का सिद्धान्त
- (ब) उपभोक्ता का सिद्धान्त
- (स) उत्पादक का सिद्धान्त
- (द) इनमें से कोई नहीं

7. समष्टि अर्थशास्त्र अध्ययन है-

- (अ) अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसर का
- (ब) वस्तुओं की पूर्ति नियम का
- (स) स्कूटर में माँग की लोच का
- (द) बाजार में गेहूँ की कीमत का

8. सामान्य कीमत स्तर का अध्ययन किया जाता है-

- (अ) व्यक्तिगत अर्थशास्त्र में
- (ब) समष्टि अर्थशास्त्र में
- (स) दोनों अ तथा ब
- (द) इनमें से कोई नहीं

9. रोजगार सिद्धान्त का सम्बन्ध है-

- (अ) स्थैतिक अर्थशास्त्र से

- (ब) व्यष्टि अर्थशास्त्र से
(स) समष्टि अर्थशास्त्र से
(द) इनमें से कोई नहीं

10. पूँजी के स्टॉक की वृद्धि कहलाती है-

- (अ) पूँजी हास
(ब) पूँजी लाभ
(स) पूँजी निर्माण
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

11. निम्नलिखित में से कौन-सा स्टॉक है?

- (अ) सम्पत्ति (Wealth)
(ब) बचत (Saving)
(स) निर्यात (Export)
(द) लाभ (Profit)

12. समष्टि अर्थशास्त्र अध्ययन करता है-

- (अ) पूर्ण रोजगार
(ब) समग्र कीमत स्तर
(स) सकल राष्ट्रीय उत्पाद
(द) उपरोक्त सभी

13. समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत निम्न में किसका अध्ययन किया जाता है?

- (अ) राष्ट्रीय आय
(ब) पूर्ण रोजगार
(स) कुल उत्पादन
(द) उपर्युक्त सभी

14. समष्टि अर्थशास्त्र में अध्ययन किया जाता है-

- (अ) वैयक्तिक आर्थिक इकाइयों का
(ब) समग्र आर्थिक इकाइयों का
(स) वैयक्तिक इकाइयों तथा समग्र दोनों का
(द) ज्वलंत समस्याओं का (Burning problems)

15. स्टॉक के अन्तर्गत निम्नलिखित में कौन शामिल है?

- (अ) मुद्रा का परिमाण
(ब) धन
(स) गोदाम में रखे गेहूँ की मात्रा
(द) उपर्युक्त सभी

16. प्रवाह के अन्तर्गत निम्नलिखित में कौन शामिल है?

- (अ) उपभोग
(ब) निवेश

- (स) आय
(द) इनमें से सभी

उत्तर

1. (ब), 2. (द), 3. (द), 4. (द), 5. (स)
6. (अ), 7. (अ), 8. (ब), 9. (स),
10. (स), 11. (अ), 12. (द), 13. (द),
14. (स), 15. (द), 16. (द), |

लघु उत्तरीय प्रश्न:-

1. समष्टि अर्थशास्त्र क्या है? “अथवा” समष्टि अर्थशास्त्र से आप क्या समझते हैं? “अथवा” समष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषा दीजिए | “अथवा” समष्टि अर्थशास्त्र का अर्थ बताइए।

उत्तर:- समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है, जिसके तहत संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करते हैं।

जैसे:- राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, कुल रोजगार, कुल उत्पादन, आदि |

2. समष्टि अर्थशास्त्र की विशेषता बताइए।

उत्तर:- समष्टि अर्थशास्त्र की निम्न विशेषताएँ हैं-

- (i) समष्टि इकाइयों का अध्ययन
(ii) समष्टि आर्थिक चर
(iii) समष्टि उपकरण
(iv) संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित

3. व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में क्या अंतर है?

उत्तर:- व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics):- व्यष्टि अर्थशास्त्र में केवल एक व्यक्ति या किसी एक व्यक्तिगत इकाई की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र:- समष्टि अर्थशास्त्र संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।

जैसे:- राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, कुल रोजगार, कुल उत्पादन, आदि |

4. समष्टि अर्थशास्त्र के कोई 4 महत्व बताइए-

उत्तर:- समष्टि अर्थशास्त्र के प्रमुख महत्व निम्नवत हैं:-

- ➔ सरकारी आर्थिक नीतियों के निर्माण में
- ➔ आर्थिक विकास में
- ➔ अर्थव्यवस्था के समूचे अध्ययन में
- ➔ व्यक्ति अर्थव्यवस्था अध्ययन में सहायक
- ➔ अंतर्राष्ट्रीय तुलना में

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:-

1. समष्टि अर्थशास्त्र से क्या अभिप्राय है? इसके क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर:- समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र के वह शाखा है जिसके तहत संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

इसके प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार से हैं:-

(i) आय एवं रोजगार का सिद्धांत:- समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, उसकी विभिन्न अवधारणाओं तथा उसकी माप की विधियों का अध्ययन किया जाता है। इसके अलावे रोजगार निर्माण के विभिन्न तत्वों जैसे प्रभावपूर्ण माँग, कुल पूर्ति, कुल रोजगार, कुल निवेश, कुल बचत आदि का अध्ययन किया जाता है।

(ii) सामान्य कीमत स्तर एवं मुद्रा स्फीति सिद्धांत:- यह सिद्धांत मुद्रा पूर्ति करने वाले विभिन्न संघटक, अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव, थोक मूल्य सूचकांक के निर्माण मुद्रा स्फीति (Inflation) एवं अपस्फीति (Deflation) का अध्ययन करता है।

(iii) व्यापार चक्रों के सिद्धांत:- समष्टि अर्थव्यवस्था में, अर्थव्यवस्था में आई तेजी या मंदी यानि व्यापार चक्र एवं उससे जुड़ी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

(iv) आर्थिक विकास का सिद्धांत:- इसके तहत किसी राष्ट्र के अल्पविकसित होने के कारण, तथा विकास करने की नीतियों, प्रति व्यक्ति आय से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

(v) वितरण का समष्टि सिद्धांत:-

इस सिद्धांत से ज्ञात होता है की राष्ट्रीय आय में से उत्पादन के विभिन्न साधनों का हिस्सा किस प्रकार और और कितना निर्धारण हो। अर्थात मजदूरों उद्यमियों तथा भूमिपत्तियों को कितना भाग प्राप्त हो।

2. व्यक्ति अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में क्या अंतर हैं? अथवा, व्यक्ति अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर की व्याख्या कीजिए।

व्यक्ति अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1. व्यक्ति अर्थशास्त्र व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक संबंधों या आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करता है।	1. समष्टि अर्थशास्त्र संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक संबंधों अथवा आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करता है।
2. समष्टि अर्थशास्त्र मुख्यतः एक व्यक्तिगत फर्म अथवा उद्योग में उत्पादन तथा कीमत के निर्धारण से संबंधित है।	2. समष्टि अर्थशास्त्र का संबंध मुख्यतः संपूर्ण अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन तथा सामान्य कीमत स्तर के निर्धारण से है।
3. इसके मुख्य उपकरण माँग और पूर्ति है।	3. इसके मुख्य उपकरण समग्र माँग व समग्र पूर्ति है।
4. यह विशलेषण अपेक्षाकृत सरल है।	4. यह विशलेषण अपेक्षाकृत सरल है।
5. इसकी केन्द्रीय समस्या कीमत निर्धारण है।	5. इसकी प्रमुख समस्या उत्पादन एवं रोजगार का निर्धारण है।

3. व्यक्ति और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच परस्पर निर्भरता की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर:- व्यक्ति एवं समष्टि अर्थशास्त्र की पारस्परिक निर्भरता:- सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र आर्थिक विशलेषण की दो अलग – अलग पद्धति हैं और ये दोनों ही पद्धतियाँ परस्पर पूरक एवं एक दुसरे पर निर्भर हैं।

(i) व्यक्ति अर्थशास्त्र की समष्टि अर्थशास्त्र पर निर्भरता:-

समष्टि आर्थिक विशलेषण के लिए व्यक्ति यानि सूक्ष्म

आर्थिक विश्लेषण का अध्ययन अति आवश्यक है | संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन करने के लिए व्यक्तिगत इकाइयों की जानकारी होना अति आवश्यक है। इसके लिए हमें व्यक्तिगत अर्थशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता है। यदि सभी लोगों की आय बढ़ जाती है तो उस बढ़ी हुई आय को लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यय करेंगे जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में भिन्न-भिन्न प्रकार की मांग बढ़ेगी अर्थात् ऐसी स्थिति में किन-किन वस्तुओं का उत्पादन कितनी मात्रा में किया जाए, यह व्यक्तिगत आर्थिक विश्लेषण के आधार पर ही निर्धारित किया जा सकता है |

(ii) समष्टि अर्थशास्त्र की व्यक्तिगत अर्थशास्त्र पर निर्भर:- निम्न उदाहरण से यह स्पष्ट होता है की समष्टि आर्थिक विश्लेषण सूक्ष्म / व्यक्तिगत अर्थशास्त्र पर निर्भर करता है।
(क) व्यापक स्तर पर आर्थिक निष्कर्ष निकालने के लिए व्यक्तिगत इकाइयों की जानकारी पर आवश्यक है।
(ख) व्यक्तिगत आर्थिक क्रियाओं का योग ही अर्थव्यवस्था की आर्थिक क्रियाओं का निर्धारण करता है | उपभोग, बचत, रोजगार आदि का निर्धारण व्यक्तिगत आर्थिक क्रियाओं पर आधारित है |

4. व्यक्तिगत और समष्टि अर्थशास्त्र से क्या समझते हैं? समष्टि अर्थशास्त्र के महत्व को बताइए-

उत्तर:- व्यक्तिगत अर्थशास्त्र (Micro Economics):- व्यक्तिगत अर्थशास्त्र में केवल एक व्यक्ति या किसी एक व्यक्तिगत इकाई की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है |

समष्टि अर्थशास्त्र :- समष्टि अर्थशास्त्र संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है | जैसे:- राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, कुल रोजगार, कुल उत्पादन, आदि |

समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व:- वर्तमान समय में इसकी उपयोगिता निम्नानुसार है:-

(i) सरकारी आर्थिक नीतियों का निर्माण – सरकारी आर्थिक नीतियों के सफल निर्माण के लिए व्यापक आर्थिक विश्लेषण परमावश्यक है | राज्य का उद्देश्य पूरे समाज के लिए अधिकतम कल्याण प्राप्त करना होता है |

इसके लिए समग्र रूप से अर्थशास्त्र के घटकों का अध्ययन एवं प्रयोग आवश्यक है |

(ii) आर्थिक विकास – अल्पविकसित देशों में आर्थिक विकास का दायित्व प्रमुख रूप से सरकार पर होती है | पूँजी-निर्माण की दर में वृद्धि करने के लिए आर्थिक योजनाओं का निर्माण महत्वपूर्ण है जिसके लिए समष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

(iii) अर्थव्यवस्था का समूचा अध्ययन – समूचे यानि की समग्र अर्थव्यवस्था का अध्ययन करने के लिए हमें समष्टि अर्थशास्त्र का आर्थिक विश्लेषण करना जरूरी है | राष्ट्रीय आय, कुल उत्पादन, कुल उपभोग, कुल बचत, पूँजी निर्माण की दर आदि तथ्यों का अध्ययन और विश्लेषण करने के लिए व्यापक अर्थशास्त्र की आवश्यकता है।

(iv) व्यक्तिगत अर्थशास्त्र के अध्ययन में सहायक:- समष्टि अर्थशास्त्र हमें किसी एक व्यक्ति या एक इकाई के लिए निति निर्माण या मूल्य निर्धारण आदि में काफी सहायक होती है।

(v) अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएँ:- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के मध्य उनकी आर्थिक प्रगति की तुलना करने के लिए जो आवश्यक सूचनाएँ चाहिए वो हमें समष्टि अर्थशास्त्र के द्वारा ही उपलब्ध हो पाती है।

अतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है की व्यक्तिगत और समष्टि अर्थशास्त्र भले जी आर्थिक विश्लेषण की दो अलग-अलग रीतियाँ हैं किन्तु ये परस्पर प्रतियोगी न होकर पूरक हैं यानि एक दुसरे पर निर्भर है।

5. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता की वर्णन करें।

उत्तर:- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था:- वैसी अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पादन के सभी साधनों पर निजी व्यक्तियों का अधिकार और नियंत्रण हो तथा सभी आर्थिक क्रियाएँ निजी हित एवं लाभ के लिए किया जाता है, जिसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है उसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं।

❖ इसकी कुछ प्रमुख विशेषता इस प्रकार हैं:-

(i) निजी संपत्ति का अधिकार:- इस अधिकार का अर्थ है निजी संपत्ति जैसे- जमीन, कारखाना, मशीन, संयंत्र आदि का स्वामित्व निजी व्यक्तियों का कंपनियों के अधीन हो सकता है |

(ii) **मूल तंत्र:-** आपूर्ति और माँग की ताकतें अर्थव्यवस्था में कीमत और उत्पादन के स्तर को निर्धारित करती है। इस मामले में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है।

(iii) **लाभ का उद्देश्य:-** सभी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के पीछे का उद्देश्य अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना है। जिसके लिए अधिकतम उत्पादन एवं बिक्री करण चाहती है। इससे अर्थव्यवस्था में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी उत्पन्न होती है।

(iv) **उद्यम की स्वतंत्रता:-** पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी हस्तक्षेप के अपने आर्थिक विकल्प चुनने के लिए स्वतंत्र है। इसमें उपभोक्ता एवं उत्पादक दोनों शामिल है।

6. 1929 की महामंदी का वर्णन करें?

उत्तर:- 1929 की महामंदी का वर्णन:- 1929 ई० की महामंदी विश्व इतिहास की सबसे भयंकर आर्थिक संकटों में से एक थी। इसे अमेरिका में “विश्वासघात” भी कहा जाता है। इस मंदी ने यूरोप और उत्तरी अमेरिका सहित दुनिया भर में व्यापक प्रभाव डाला। इस समय अमेरिका शेयर बाजार में भारी गिरावट हुई, जिसके कारण लाखों लोग बेरोजगार हो गए और आर्थिक स्थिति अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण बन गई। बाजार में वस्तुओं की मांग कम थी कई सारे कारखाने बंद हो गए थे, श्रमिकों को काम से निकल दिया गया था। विश्व व्यापार में कमी हुई और विभिन्न देशों में बेरोजगारी और गरीबी में वृद्धि हुई की दर 3% से बढ़कर 25% हो गई थी।

इस घटना ने अर्थशास्त्रियों को एक नये तरीके से अर्थव्यवस्था के प्रकार्य को समझने एवं सोचने के लिए प्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप समष्टि अर्थशास्त्र जैसे विषय का उद्भव हुआ।